पवित्र किए जाने का अर्थ

फ्रैंकलिन के नोट्स

पवित्र किया जाना एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है और हमें इस शब्द को **स्पष्ट रीति से समझना** ज़रूरी है। इसके कई बहुत महत्वपूर्ण अर्थ हैं :

(1) **अलग किया जाना,** और (2) **पवित्र करना।** इन दोनों का मूल एक ही यूनानी शब्द हैं।

इसे दो विशिष्ट सन्दर्भ में बोला जाता है :

(1) हमें पहले **पवित्र किया जा चुका है** जिसके निरंतर, अपरिवर्तनीय परिणाम हैं। ये वह है जो परमेश्वर ने हमारे लिए कर दिया है। उसने **हमें** अपने लिए **अलग किया,** हमें अपने पुत्र यीशु मसीह के लहू के द्वारा **शुद्ध किया** और **पवित्र ठहरा दिया** है।

(2) पवित्रशास्त्र स्वयं को **पवित्र करने** के **हमारे उत्तरदायित्व** के बारे में भी बताता है। **हमें अपने को** सांसारिकता से **अलग** करना और पवित्र जीवन जीना चाहिए।

हमारा अध्ययन यह है:

I. **परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है**: उसने हमें दूषित वातावरण से **अलग किया** ताकि हमें अपने लिए इस्तेमाल कर सके।

इसे सबसे पहले निर्गमन 13:2 में स्पष्ट किया गया; हम पढ़ते हैं कि उस दिन पर्वत, वेदी, और पशुओं को पवित्र किया गया। **अर्थात : "परमेश्वर की विशिष्ट सेवा के लिए अलग किया गया।"**

इब्रानियों 9:19-22 क्योंकि जब मूसा सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका तो उसने बछड़ों और बकरों का **लहू** लेकर, पानी और लाल ऊन और जूफा के साथ, **उस पुस्तक** पर और **सब लोगों** पर छिड़क दिया 20 और कहा, "यह उस वाचा का लहू है, जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे लिये दी है।" 21 और इसी रीति से उसने **तम्बू** और सेवा के सारे **सामान** पर **लहू** छिड़का। 22 सच तो यह है कि व्यवस्था के अनुसार **प्रायः सब वस्तुएँ लहू** के द्वारा **शुद्ध की जाती हैं**, और बिना **लहू** बहाए पापों की **क्षमा नहीं।**

- इस वाक्यांश के महत्व पर ध्यान दें : **सब वस्तुएँ** लहू के द्वारा **शुद्ध की जाती हैं,** और बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं। हमारे लिए यीशु का लहू बहाया गया।
- अतः हमें **क्षमा प्राप्त** होती है, और यदि हम **शुद्ध** और **क्षमा प्राप्त** कर चुके है, तो **पवित्र** ठहरे हैं। ये सब एक ही यूनानी शब्द के अर्थ में निहित है।

यही **हम हैं** और

मसीह में यही हमारी अनंत स्थिति है।

- यह **किया जा चुका** और **पूरा हुआ** तथा **समाप्त कार्य** है, जैसा यीशु ने कहा, पूरा हुआ। यूहन्ना 19:30। यही परमेश्वर के चुने हुए बलिदान यीशु मसीह के **लहू** ने क्रूस पर हम सब के लिए किया।

- ये हमारे पिता परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र के बलिदान को **देखने** का तरीका है, और **वह हमें** भी इसी रीति से **देखता है**। यीशु मसीह में हर एक विश्वासी **पवित्र है। मैं पवित्र हूँ! आप पवित्र हैं!**

व्यवस्थाविवरण 7:6 क्योंकि **तू** अपने परमेश्वर यहोवा की **पवित्र प्रजा है**; यहोवा ने पृथ्वी भर के **सब देशों के लोगों में से तुझ को चुन लिया है** कि तू उसकी प्रजा और निज धन (या विशेष बहुमूल्य खज़ाना) ठहरे। हाँ, यह इस्राएल के लोगों के लिए बोला गया, और स्पष्ट रूप से इसका सम्बन्ध उनके आचरण से नहीं था। यह हमारे लिए भी कहा गया है।

परमेश्वर का मन्दिर **पवित्र** है, और **वह तुम हो।**
1 कुरिन्थियों 3:17

1. यह तब होता है जब हम विश्वास करते हैं, जब हम धर्मी ठहराए जाते हैं।

- प्रेरितों के काम 26:18 **मैं** ... तुझे भेज रहा हूँ, कि तू **उनकी आँखें खोले** कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर **फिरें**; कि पापों की **क्षमा और उन लोगों के साथ** जो **मुझ पर विश्वास करने से** ***पवित्र किए गए हैं**, मीरास **पाएँ**।'

***एक समाप्त कार्य जो पूर्व में, क्रूस पर पूरा किया जा चुका है, और जिसके निरंतर परिणाम जारी हैं।

***यूनानी #37: ἁγιάζω हगियाज़ो **पवित्र करना**, शुद्ध करना, **पवित्र कार्य के लिए अलग करना, पवित्र होना, पवित्र किया जाना।** पूर्णकालिक क्रिया – यह भूतकाल में हुआ जिसके निरंतर परिणाम जारी हैं। कर्मवाच्य – हमने यह नहीं किया, हमारे लिए यह किया गया और हमें दिया गया।

प्रेरितों के काम 20:32 और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और **सब** **पवित्र किए गए** **लोगों** में साझी करके मीरास दे सकता है। वही शब्द : पूर्णकालिक क्रिया, कर्मवाच्य। एक पूर्ण समाप्त कार्य।

2. इसमें सब विश्वासी शामिल हैं, और हमें क्यों पवित्र लोग कहा गया है।

- 1 कुरिन्थियों 1:2 परमेश्वर की उस **कलीसिया** के नाम **जो** कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में ***पवित्र किए गए**, और ****पवित्र लोग** होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन **सब** के नाम भी जो **हर जगह** हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।

  यूनानी : *ἁγιάζω - क्रिया **ἅγιος - उसी शब्द का विशेषण

3. यह उसका कार्य है — उसकी जिम्मेवारी।

- 1 कुरिन्थियों 1:30 परन्तु **उसी की ओर से** तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और **पवित्रता**, और छुटकारा; ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, "जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे।"

  हमने इसे अर्जित नहीं किया, और न ही हम इसके योग्य थे!

4. यह पूरा हो गया है। यह समाप्त कार्य है। यह हो चुका है। यह सब हमारे पिता **परमेश्वर के अनुग्रह** और उसके पुत्र यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा हुआ है।

- 1 कुरिन्थियों 6:11 और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु **तुम** प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और **पवित्र हुए** और धर्मी ठहरे।

5. यह उद्धार का प्रवेश द्वार है

- 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 हे भाइयो, और प्रभु के **प्रिय** लोगो, चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि परमेश्वर ने **आदि से** तुम्हें **चुन लिया** कि आत्मा के द्वारा **पवित्र बनकर**, और सत्य की प्रतीति करके **उद्धार पाओ**।

- यदि उसके अनुग्रह के द्वारा हम पवित्र नहीं बने और पवित्र नहीं हैं तो हम बचाए नहीं जा सकते, हम उसकी उपस्थिति में प्रवेश भी नहीं कर सकते।

6. हमारा पवित्र किया जाना क्रूस पर पूरा हुआ था।

- इब्रानियों 10:10 उसी इच्छा से **हम** यीशु मसीह की **देह** के एक ही बार **बलिदान चढ़ाए जाने** के द्वारा **पवित्र किए गए** हैं।

- इब्रानियों 13:12 इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को **अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने के लिये** फाटक के बाहर दुःख उठाया।

- कुलुस्सियों 1:22 उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा **तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें**

अपने सम्मुख **पवित्र** (ἁγίους वही शब्द) और **निष्कलंक**, और **निर्दोष बनाकर** उपस्थित करे।

- 1 कुरिन्थियों 1:7-9 ... हमारा प्रभु यीशु तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में **निर्दोष** ठहरो।
- कुलुस्सियों 1:22 **उसने** अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी **मेल कर लिया ताकि तुम्हें** अपने सम्मुख **पवित्र** और **निष्कलंक,** और **निर्दोष बनाकर** उपस्थित करे।
- यहूदा 24-25 अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और **अपनी महिमा** की भरपूरी के सामने मगन और **निर्दोष** करके खड़ा कर सकता है, 25 उस एकमात्र परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा और गौरव और पराक्रम और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन।

यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर के सामने हमारी अनंत स्थिति है।
वह आज हमें इसी तरह से देखता है।

यीशु मसीह में हर विश्वासी, परमेश्वर की **दया** और **अनुग्रह** के द्वारा, और यीशु मसीह के बलिदान और हमारे लिए बहाए उसके लहू के द्वारा **पवित्र है।** लूका 22:19

आप पवित्र हैं!

पवित्र किए जाने का दूसरा अर्थ :

II. पृथ्वी पर हमारी स्थिति : **मैं पवित्र हो रहा हूँ।**

- लैव्यव्यवस्था 20:26 **तुम** मेरे लिये **पवित्र बने रहना;** क्योंकि मैं यहोवा स्वयं पवित्र हूँ, और मैं ने तुम को और देशों के लोगों से इसलिये **अलग किया है** (आगे देखिए) कि तुम निरन्तर **मेरे ही बने रहो।**
- 2 कुरिन्थियों 6:16-18 क्योंकि **हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं;** जैसा परमेश्वर ने कहा है, "मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला फिरा करूँगा; और मैं उनका परमेश्वर हूँगा, और वे मेरे लोग होंगे।" 17 **इसलिये प्रभु कहता है, "उनके बीच में से निकलो और अलग रहो;** और अशुद्ध वस्तु मत छूओ, तो मैं तुम पर कृपा करके (शाब्दिक अनुवाद) तुम्हें ग्रहण करूँगा; 18 और मैं तुम्हारा पिता हूँगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होगे। यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।"

1. पवित्र आत्मा हमारे भीतर कार्य करता है, और वह यीशु की आज्ञा मानने के लिए हमें उकसाता, दिखाता और सिखाता है।

- लूका 6:46 "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु,' कहते हो?

- 1 पतरस 1:1-2 उन परदेशियों के नाम **जो** ... परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्मा के **पवित्र करने** (ἁγίους वही शब्द) के द्वारा **आज्ञा मानने** और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिये **चुने गए** हैं। तुम्हें अनुग्रह और शान्ति बहुतायत से मिलती रहे।

2. हमें यीशु के समान होना है और उसके समान पवित्र बनना है।

1 पतरस 1:14-16 **आज्ञाकारी बालकों** के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। 15 पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र (ἁγίους वही शब्द) है, वैसे ही तुम भी **अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो।** 16 क्योंकि लिखा है, "पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"

व्यवस्थाविवरण 23:14 क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बचाने और तेरे शत्रुओं को तुझ से हरवाने को तेरी छावनी के मध्य घूमता रहेगा, इसलिये **तेरी छावनी पवित्र रहनी चाहिये**, ऐसा न हो कि वह तेरे मध्य में कोई अशुद्ध वस्तु देखकर तुझ से फिर जाए।

क्यों? यह दुष्ट को आप पर आक्रमण करने का वैध अधिकार देता है।

इब्रानियों 10:13-14 और उसी समय से इसकी बाट जोह रहा है, कि उसके बैरी उसके पाँवों के नीचे की पीढ़ी बनें। 14 क्योंकि उसने **एक ही चढ़ावे** के द्वारा उन्हें जो ***पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा** के लिये **सिद्ध कर दिया** है।

*वर्तमानकालिक कर्मवाच्य कृदंत

इस पद में दोनों सत्य मौजूद हैं। **अनंत सत्य : मैं सर्वदा के लिए पवित्र और सिद्ध हूँ। पृथ्वी का चित्र -> मुझे पवित्र किया जा रहा है,** यह परमेश्वर का हमारे जीवन में निरंतर चल रहा कार्य है जबकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते और परिणामस्वरूप दुष्ट जन के प्रहारों से बचाए जाते हैं।

2 कुरिन्थियों 7:1 अतः हे प्रियो, जब कि ये प्रतिज्ञाएँ हमें मिली हैं, तो आओ, हम **अपने आप को** शरीर और आत्मा की सब मलिनता से **शुद्ध करें,** और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें। हमारा भाग।

2 तीमुथियुस 2:21 **यदि कोई अपने आप को** इनसे **शुद्ध करेगा**, तो वह आदर का बरतन और **पवित्र ठहरेगा**; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा।

यह हमारी जिम्मेवारी है।

शुभ समाचार यह है –> यदि हम यीशु के साथ काम करें तो वह हमारे साथ काम करेगा और हमारी सहायता करेगा।

इफिसियों 5:25-28 **मसीह** ने भी **कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया** (क्यों?) 26 **कि उसको वचन के द्वारा** (कैसे) **जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए,** (क्यों?) 27 और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर **अपने पास खड़ी करे**, जिसमें **न कलंक, न झुर्री,** न कोई और ऐसी वस्तु हो वरन् **पवित्र** और **निर्दोष** हो।

- हमें मसीह को अनुमति देनी चाहिए कि वह हमें उसके वचनों को पढ़ने और उनका अध्ययन करने के द्वारा शुद्ध करे।

1 थिस्सलुनीकियों 4:3-8 कि **परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो** : अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो, 4 और तुम में से हर एक **पवित्रता** और आदर के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने, 5 और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों के समान जो परमेश्वर को नहीं जानतीं, 6 कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे, और न उस पर दाँव चलाए, क्योंकि प्रभु इन सब बातों का पलटा लेनेवाला है; जैसा कि हम ने पहले ही तुम से कहा और चिताया भी था। 7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु **पवित्र होने** के लिये (या पवित्रता, वही यूनानी शब्द) बुलाया है। 8 इस कारण जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है।

1 यूहन्ना 3:2-3 हमारा उसके सदृश्य होने का आरम्भ उसके समान बनने की हमारी इच्छा से होता है।

हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की **सन्तान** हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। 3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को **वैसा ही पवित्र करता है** जैसा वह पवित्र है।

अतः हम मसीह "में" अपनी अनंत स्थिति देखते हैं :

हम पवित्र किए गए हैं। हम पवित्र हैं। **यह उसका कार्य है।**

और पृथ्वी पर प्रतिदिन हमारी स्थिति मसीह "में" यह है :

हम अधिक से अधिक पवित्रता की ओर बढ़ते जाते और पवित्र बनते जाते हैं।

अपने आचरण में अधिक से अधिक अलग और पवित्र किए हुए।

यह हमारी जिम्मेवारी है। हमारा काम।

और हमारे पिता द्वारा पापों का प्रतिरोध करने और पवित्रता की खोज में लगे रहने के गंभीर महत्व को इस परिच्छेद में देखा जा सकता है :

इब्रानियों 12:4-11 **तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की कि तुम्हारा लहू बहा हो**; 5 और तुम उस उपदेश को, जो तुम को पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो : "हे मेरे पुत्र, प्रभु की **ताड़ना** को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़। 6 क्योंकि **प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है**, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।" 7 तुम दुःख को **ताड़ना** समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? 8 **यदि वह ताड़ना** जिसके भागी सब होते हैं, **तुम्हारी नहीं हुई** तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे। 9 फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहें जिससे हम जीवित रहें। 10 वे तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर **वह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ।** 11 वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है; तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, बाद में **उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।** 14 सबसे **मेल मिलाप** रखो, और **उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।**

इब्रानियों 2:11 क्योंकि **पवित्र करनेवाला** और **जो पवित्र किए जाते हैं**, सब एक ही मूल **से** हैं (ऊपर से जन्मे); इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता।

यही दो-भागीय सच, हमारे उद्धार में भी दिखाई देता है।

हम बचाए जा चुके हैं और दिन प्रति दिन बचाए जाते हैं।

इफिसियों 2:4-10 परन्तु परमेश्वर ने जो **दया का धनी है**, अपने **उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया**, 5 जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो **हमें** मसीह के साथ **जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)**, 6 और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया 7 कि वह अपनी उस **कृपा से** जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने **अनुग्रह का असीम धन** दिखाए। 8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् **परमेश्वर का दान** है, 9 और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

2 तीमुथियुस 1:9; तीतुस 3:5 को भी देखें।

1 कुरिन्थियों 1:18-19 क्योंकि **क्रूस की कथा** नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है, परन्तु हम **उद्धार पानेवालों** के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है।

लूका 9:23 यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो **अपने आप से इन्कार करे** और **प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए** हुए **मेरे पीछे हो ले।**

फिलिप्पियों 2:12-13 **इसलिये हे मेरे प्रियो**, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और काँपते हुए अपने अपने ***उद्धार का कार्य** (हमारी जिम्मेवारी) पूरा करते जाओ; 13 क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के **करने का** प्रभाव डाला है।

आप अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जा सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर आप में **इच्छा** और **काम,** दोनों बातों के **करने का प्रभाव डालने** के द्वारा कार्यरत है

अनंत सत्य : मैं अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के **बहुमूल्य** **लहू** के द्वारा

सदा के लिए सिद्ध, पवित्र और बचाया गया हूँ।

पृथ्वी सम्बन्धित चित्र -> हमें पवित्र बनना है -> वह बनना है जो हम हैं, जबकि हम आज्ञाओं का पालन करते हैं और दुष्ट जन के प्रहारों के विरुद्ध विजय प्राप्त करते जाते हैं तो आओ हम अपने **उद्धार के कार्य** को पूरा करते जाएँ।

परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा **हमें जयवन्त करता है।** 1 कुरिन्थियों 15:57

रोमियों 10:9-10 कि यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने **मन** से **विश्वास करे** कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो **तू निश्चय उद्धार पाएगा।** (अनंत उद्धार, प्रमाणित...)10 क्योंकि **धार्मिकता** (परमेश्वर की दृष्टि में सही आचरण। इस धार्मिकता के लिए जो चाहिए वह सिर्फ यह है कि विश्वास करें। यीशु के बलिदान और लहू ने हमारा मूल्य चुका दिया है।) **के लिये मन से विश्वास किया जाता है,** और **उद्धार के लिये मुँह से अंगीकार किया जाता है।**

- जो सच्चा विश्वासी होगा, वह मुँह से अंगीकार करेगा, और प्रभु का नाम लेगा, और उद्धार पाएगा। (पद 11) न सिर्फ अनंत उद्धार के लिए बल्कि दिन प्रति दिन के उद्धार के लिए, जैसा कि वह कहता है जो आत्मा की तलवार, परमेश्वर का वचन है।
- मत्ती 12:34 जो मन में भरा है, वही **मुँह पर आता** है।
- प्रकाशितवाक्य 12:10-11 अब हमारे परमेश्वर का उद्धार और सामर्थ्य और राज्य और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है, क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया है। 11वे (1) **मेम्ने के लहू** के कारण और (2) **अपनी गवाही के वचन**

के कारण (कही गई और घोषित की गई) उस पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली।

विश्वासी से कहा गया है कि वह अपने हृदय
की रक्षा के लिए
धार्मिकता की झिलम पहन लें।

यह भी **हमारे लिए दिया** और **उपलब्ध किया गया** है, लेकिन जब हमारे हृदय का विश्वास हमें नियन्त्रण में लेता तथा हमारे दिमाग और हमारे मन को भर देता है और हम उसके अनुसार जीवन जीते हैं, तो **हम इसे पहन लेते हैं।**

समापन में :

आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश **न बनो।** 15 पर **जैसा** तुम्हारा बुलानेवाला **पवित्र है**, वैसे ही तुम भी **अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो।** 16 क्योंकि लिखा है,

पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ। 1 पतरस 1:14-16